संस्थापित १८६७ ई.

आर्य मित्र

साप्ताहिक

आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश का मुख पत्र

आजीवन शुल्क ₹ १०००
वार्षिक शुल्क ₹ १००
(विदेश ५० डालर वार्षिक) एक प्रति ₹ २.००

● वर्ष : १२० ● अंक : ४३ ● ०३ नवम्बर, २०१५ कार्तिक कृष्ण सप्तमी सम्वत् २०७२ ● दयानन्दाब्द १६१ वेद व मानव सृष्टि सम्वत् : १६६०८५३११६

महर्षि दयानन्द ने जन जागरण के लिए आर्य समाज की स्थापना की

-देवेन्द्रपाल वर्मा

आर्य समाज चैड़ौली बुजुर्ग अलीगढ़ का वार्षिकोत्सव दिनांक २५ से २७ अक्टूबर, २०१५ तक आयोजित किया गया जिसमें यज्ञ भजन विद्वानों के उपदेश हुये।

प्रथम दिन दिनांक २५.१०.१५ को जिला सभा अलीगढ़ के तत्वावधान में आर्य प्रतिनिधि सभा उ.प्र. के प्रधान श्री देवेन्द्रपाल वर्मा का सम्मान समारोह आयोजित किया। समारोह में सायं ४ बजे आर्य समाज चैड़ौली एवं जिला सभा अलीगढ़ के सभी पदाधिकारियों एवं सदस्यों ने माल्यार्पण किया। जिला सभा के प्रधान ब्रह्मचारी पूरन सिंह आर्य एवं मंत्री श्री विजयपाल सिंह आर्य ने प्रधान जी को शाल एवं महर्षि दयानन्द द्वारा प्रणीत अमर ग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश भेंट कर सम्मानित किया।

सभा प्रधान जी ने उपस्थित जन समूह को सम्बोधित करते हुये कहा कि महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती ने सन् १८७५ में आर्य समाज की स्थापना की थी। उस समय देश पूर्ण पराधीन था ढोंग पाखण्ड नारी का पद दलन अशिक्षा देश को पूरी तरह से मिटाने में लगा था। महर्षि दयानन्द ने कहा कि आर्य समाज जन समाज को जगाने, सही मार्ग पर चल कर देश में स्वाधीन करा कर सुख समृद्धि पूर्ण बनाने और सदैव सम्पूर्ण देशवासियों को देश हितैषी भावनायें भरने की एक पाठशाला है। ऋषि की भावना रंग लायी देश में जागृति आई। स्वराज्य आन्दोलन चला हम स्वतंत्र हुये हमारा संविधान बना जिसमें महर्षि दयानन्द के साथ मन्तव्य व सिद्धान्त जोड़े गये। देश बढ़ने लगा शायद हमने अपना काम पूरा मान लिया। बस देश में पुनः ढोंग पाखण्ड नारी उत्पीड़न, परस्पर जाति पांति का भेद बढ़ने लगा।

राजनेता इसे अपनी सत्ता हथियाने के लिए इनको खत्म करने के बजाय इन्हें बढ़ाने में अपनी अपनी भाषण शैली से योगदायी बनने लगे। आज देश में परस्पर विश्वास का अभाव हो रहा है। प्रेम सौहार्द्र बनने के बजाय विरोधी भाव बढ़ने लगे हैं। शिक्षा व्यवस्था में अंग्रेजी व अंग्रेजियत का बोलबाला हमारी युवा पीढ़ी बड़े बुजुर्गों का सम्मान बढ़ाने के बजाय उनकी उपेक्षा करने में अपना हित माल कर चल रही है।

अतः आज देश के सभी आर्य जनों को इस पर गम्भीर चिन्तन करके आर्य समाज के विचारों व कार्यों को जन जन में पहुंचाने के लिए दृढ़प्रतिज्ञ होना होगा। हम सभी संकल्प लें हम स्वयं सच्चे आर्य बनकर अपने घर परिवार एवं समाज को सच्चा आर्य बनाने में एड़ी चोटी से जुट जायेंगे और महर्षि दयानन्द की भावनाओं के अनुरूप अपने देश को सुखी समृद्ध संगठित बनाकर विश्व का शिरमौर बनायेंगे। निश्चय ही हमारे ऐसे प्रयत्न से समाज में जागृति आयेगी। विभिन्न रूपों में फैलती बुराइयों को नष्ट करने की हममें सामर्थ्य आयेगी। अपने वक्तव्य को विराम देते हुए प्रधान जी ने आर्य समाज के सभी अधिकारियों और सदस्यों को इस सम्मान समारोह आयोजन के लिए धन्यवाद दिया।

स्वागत समारोह की व्यवस्था विजय सिंह राघव द्वारा पूर्ण रूपेण की गयी थी। ●●●

वेदामृतम्

त्वं सोम अतुभिः सुअतुर्भूः, त्वं दक्षैः सुदक्षो विश्ववेदाः।
त्वं वृषा वृषत्वेभिर्महित्वा, द्युम्नेभिर् द्युम्न्यभवो नृचक्षाः।।

(सोम) हे जगदुत्पादक तथा शुभगुणप्रेरक परमात्मन्। (त्वं) तू (अतुभिः) प्रज्ञाओं और कर्मों से (सुअतुः) सुप्रज्ञ और सुकर्मों (भूः) हुआ है। (विश्ववेदाः) सर्वव्यापक तथा सर्वज्ञ (त्वं) तू (दक्षैः) दक्षताओं एवं बलों से (सुदक्षः) सुदक्ष (हुआ है)। (त्वं) तू (वृषत्वेभिः) विद्या, सुख, धन आदि की वर्षाओं से (तथा) (महित्वा) महिमा से (वृषा) वर्षक तथा महान् (हुआ है), (और) (नृचक्षाः) मनुष्यद्रष्टा (तू) (द्युम्नेभिः) तेजों, यशों, अन्नों, और धनों से (द्युम्नी) तेजस्वी, यशस्वी, अन्नवान् और धनी (हुआ है)।

हे सोम प्रभु ! तुम अपने द्वारा हमारे ऊपर निरन्तर की जाने वाली वर्षाओं से 'वृषा' या वर्षक बने हुए हो। तुम हमारे ऊपर जल, विद्या, धन, सुख, विनय, सत्य, न्याय, दया, रक्षा आदि की सतत वृष्टि करते रहते हो, जिससे हम परिपुष्ट होते हैं। हे प्रभु ! तुम 'द्युम्नों' से द्युम्नी बने हुए हो। तेज, यश, धन, अन्न आदि प्रशस्त द्युम्न के तुम धनी हो, अतएव प्रशस्य और वन्दनीय हो।

डा० रामनाथवेदालंकार

आर्य समाज सम्पूर्ण मानव जाति का एक सूत्र में जोड़ने का सन्देश देता है-देवेन्द्रपाल वर्मा

आर्य समाज गोविन्द पुरम् गाजियाबाद का वार्षिकोत्सव सम्पन्न

आर्य समाज गोविन्दपुरम्, गाजियाबाद का वार्षिकोत्सव दिनांक २४.१०.२०१५ को बड़े समारोह पूर्वक सम्पन्न हुआ। उत्सव में आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश के प्रधान श्री देवेन्द्रपाल वर्मा, मंत्री-स्वामी धर्मेश्वरानन्द सरस्वती २४.१०.२०१५ के वेदोपदेश हुये और बालक बालिकाओं के आकर्षक कार्यक्रम आयोजित किये गये।

श्री देवेन्द्रपाल वर्मा प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा उ.प्र. ने २४.१०.१५ को समारोह स्थल पर पहुंचे जहां आर्य समाज के प्रधान श्री शिव शंकर शर्मा व सतीश मेहरान ने पदाधिकारियों ने उनका माल्यार्पण कर भव्य स्वागत किया। सभा प्रधान जी ने समारोह में उपस्थित सभी आर्य नर-नारियों को सम्बोधित करते हुये कहा कि आर्य समाज ही सभी मानवों को वेद मार्ग पर चलने का सन्देश देती है। उन्होंने कहा वेद ही परमात्मा का अमृत ज्ञान है जो आदि सृष्टि में ही परमात्मा ने सम्पूर्ण मानव जाति के कल्याण के लिए एक दूसरे प्रति समता एवं एकता स्थापित करने के लिए हमें दिया है। सारे संसार में वैदिक साम्राज्य था ऋषि मुनि वेद ज्ञान के प्रचार प्रसार में सदैव संलग्न रहते थे।

द्वापर के अन्तिम समय में जब धृतराष्ट्र (नेत्र विहीन) विश्व के चक्रवर्ती राजा बने तब उनके पुत्र दुर्योधन में अज्ञान अन्धकार छा गया। वह राज्य प्रमुख था उसके चचेरे भाई पाण्डवों को उनका अधिकार न देने का हठ ठान लिया। योगेश्वर कृष्ण के बहुत समझाने के बाद भी जब उसने हठ न छोड़ा। अधर्म बढ़ने लगा तब कौरवों पाण्डवों का युद्ध हुआ युद्धमें पाण्डव विजयी हुये परन्तु विश्व के सभी युद्ध महारथी एवं विद्वान समाप्त हो गये। शासन व्यवस्था तहस नहस होने लगी। वेद के स्थान पर पुराण आदि अवैदिक ग्रन्थ धर्म ग्रन्थ कहे जाने लगे।

विदेशी आक्रान्ताओं ने इसका फायदा उठाकर हम पर आक्रमण किया हमारी सम्पदा लूटी हमें कंगाल बनाने के साथ अपना गुलाम बना लिया। अंग्रेजों ने तो हद ही पार कर दी हमारा प्राचीन इतिहास बदल डाला हमारी शिक्षा व्यवस्था नष्ट कर दी। आर्यो को विदेशी आक्रमणकारी घोषित किया। आर्यो में आदिवासी वर्ण को पृथक बताकर आपस में लड़ाने का काम किया हमें सभी तरह से अपना गुलाम बना लिया। पराधीनता के काल में ही महर्षि दयानन्द का उदय हुआ जिन्होंने पराधीनता के मूल में वेद ज्ञान का अभाव पाया उसी कारण सभी बुराइयों-ढोंग पाखण्ड स्त्री का पद दलन जाति पांति का भेद तथाकथित ब्राह्मणों के समाज पर एकाधिकार से शूद्रों का पद दलन और शोषण से सम्मान को विनष्ट होना पाया।

महर्षि ने सभी मानव जाति को एक सूत्र में पिरोने के लिए वेदों की ओर लौटने का आह्वान किया। आर्य समाज की स्थापना जन जागृति के लिए की। जन जागृति हुयी। स्वराज्य आन्दोलन चला हमारा देश आजाद हो

शेष पेज ७ पर देखें....

देवेन्द्रपाल वर्मा
प्रधान/संरक्षक

स्वामी धर्मेश्वरानन्द सरस्वती
मंत्री/प्रधान सम्पादक

आचार्य वेदव्रत अवस्थी
सम्पादक

सम्पादकीय.....

राजनेता धर्म का अर्थ जाने और देश टूटने से बचायें।

धर्म सम्पूर्ण मानव समाज को एकता के सूत्र में जोड़ता है। तोड़ता नहीं। राजनेता अपने भाषणों में धर्म निरपेक्ष एवं साम्प्रदायिक शब्दों को परस्पर विरोधी भाव से जोड़ते रहते हैं। सत्य तो यह है-कर्म निरपेक्ष का अर्थ धर्म रहित है। धर्म निरपेक्ष मनुष्य-मानव हो ही नहीं सकता। वह तो पशु से भी गिरा हुआ होगा। भारत के सम्विधान में धर्म निरपेक्ष शब्द है ही नहीं वहां तो पन्थ निरपेक्ष शब्द है। संविधान में जिसे अंग्रेजी में सेकुलर शब्द दिया गया है-अर्थात् सबमें समानता का भाव रखना। परन्तु राजनेताओं ने पंथ निरपेक्ष एवं धर्म निरपेक्ष के अर्थ को रंच मात्र समझने का प्रयत्न नहीं किया। धर्म एक है पंथ (मत) अनेक हैं। धर्म प्रचारक मनीषियों ने अपने अपने चिन्तन से परमात्मा के विविध नामों व कार्यो की व्याख्या अपने चिन्तन के आधार पर की और उन बातों का प्रचार किया गया और उन बातों को समाज में धर्म के समग्र सच्चे स्वरूप को समझने के लिए प्रचारित किया। बाद में उनके तथाकथित अनुयायियों ने पृथक पृथक पंथ बना डाला। जिससे धर्म के सत्य स्वरूप के प्रचार में बाधा आने लगी। आपस में वैर-विरोध पनपने लगा। राष्ट्रीय संगठन में क्षीणता आयी। फलतः हमारे आपसी वैर विरोध का फायदा उठाकर हमारे देश पर विदेशियों ने आक्रमण किया। हमारी सम्पदा लूट लूट कर अपने देशों में पहुंचाया, हमें कंगाल बना दिया और हमें अपना गुलाम बना दिया। धीरे-धीरे हमें गुलाम बनाने के लिए अंग्रेज व्यापारी बनकर हमारे देश में घुसे और हमारे सम्पूर्ण व्यापार तंत्र को ध्वस्त करके अपना प्रभुत्व सदा सदा बनाये रखने की योजना रचकर हमारी शिक्षा व्यवस्था बदल डाली अपनी शिक्षा व्यवस्था बनाई हमारे इतिहास को नष्ट करके अपना मनमाना इतिहास रचा, वेद ज्ञान को तिरस्कृत करने के लिए वेद के मंत्रों का अनर्थ-पंडितों को लालच देकर कराया और फिर वेद को गडरियों का गीत कहकर उपहास उड़ाया।

हमारी शिक्षा मानव जीवन निर्माण की विद्या थी उसे हटाकर अपनी शिक्षा व्यवस्था चलाकर हमें सदा गुलाम रखने की योजना बनायी। अपनी शिक्षा में उन्होंने हमें केवल रोजी रोटी की व्यवस्था दी। हम उनके चंगुल में फंसे पिसते रहे।

ऐसे बिगड़े दिनों में भगवान की कृपा से महर्षि दयानन्द का आगमन हुआ। उन्होंने अपने गुरू विरजानन्द जी के चरणों में बैठकर वेद के सत्य स्वरूप को जाना। देश की पराधीनता की वेदना को पहचाना। शिक्षा समाप्ति के बाद गुरुदेव की आज्ञा शिरोधार्य करके देश की पराधीनता की बेड़ियों को काटकर स्वतंत्र सुखी समृद्ध राष्ट्र बनाने के लिए समरांगण में कूद पड़े। उन्होंने पराधीनता के मूल को बड़ी गहराई से जांचा। उन्होंने पाया, ढोंग, पाखण्ड जाति-पांति वेर्ग-भेद का शूल नारी की अवमानना उसका पद दलन और सही शिक्षा का अभाव पाकर देश को स्वाधीन बनाकर सभी सुखों से परिपूर्ण बनाने का संकल्प लिया और घोषणा की वेदों की ओर लौटो। वेद ज्ञान से रहित होने, पुराणादि कल्पित अनार्ष पुस्तकों को धर्म ग्रन्थ मानने से ही हमारी यह दुर्गति हो रही है। उन्होंने कहा वेद का पढ़ना पढ़ाना और सुनना सुनाना प्रत्येक आर्य (मनुष्य) का धर्म है। आर्य समाज की स्थापना आन्दोलन के रूप में की। ताकि सदैव वेदानुकूल जीवन जीने का मार्ग सभी को सदैव मिलता रहे। कल्पित जाति पांति के भेद का प्रबल विरोध किया। ढोंग पाखण्ड को जीवन के विनाश का कारण कहा और उसका प्रबल विरोध कर सत्य सनातन वैदिक धर्म को स्वीकार करने का मंत्र दिया। स्वदेशी शिक्षा प्रसार के लिए गुरुकुल व पाठशालाओं के खोलने पर बल दिया। जन-जन में जागृति आने लगी। स्वराज्य आन्दोलन में सर्वाधिक आर्य नर-नारियों ने भाग लेकर देश स्वाधीन बनाने में महत्व पूर्ण भूमिका निभायी। हम स्वतंत्र हुये, हमारा अपना संविधान बना जिसमें महर्षि दयानन्द के सारे मन्तव्य समाहित कर लिये गये। संविधान में सम्पूर्ण देशवासियों में समत्व एकत्व के भाव बनाने के लिए राष्ट्र को पन्थ निरपेक्ष घोषित किया। दुर्भाग्य धर्म और पंथ के अन्तर को समझने की राजनीति में अपना स्थान बनाने वाले नेताओं ने समझने की चेष्टा नहीं की। फलतः साम्प्रदायिक व धर्म निरपेक्ष शब्द उन्होंने गढ़े। आज इन्हीं शब्दों के प्रयोग से राष्ट्र की संगठनात्मक प्रक्रिया ध्वस्त की जा रही है। सत्ता में अपनी अपनी पैठ बढ़ाने के लिए सभी पन्थों में सौमनस्य स्थापित करने का भाव हटाकर पन्थों को धर्म कहकर साम्प्रदायिक कहना आरम्भ किया। भारतीय मतों पन्थों से अतिरिक्त इस्लाम व इसाई को अल्पसंख्यक कहकर आग में घी डालने का काम किया और इसी आधार पर अपनी अपनी सत्ता पाने व बचाने का उद्योग आरम्भ कर दिया है।

राजनीति एक पवित्र दर्शन है। स्वार्थ पूर्ति का पाखण्ड नहीं। सभी राजनेता राष्ट्र को सुखी समृद्ध व संगठित रखकर विश्व में शीर्ष पर ले जाने के उद्देश्य को समझे। स्वार्थगत प्रवृत्तियों का प्रयोग करके देश को तोड़ने के पाप से बचें। सभी नेता इस बात को गहरायी से समझें कि धर्म एक है। शाश्वत् है कभी भी उसका स्वरूप बदलता नहीं। पन्थ अनेक हैं उनके स्वरूप में अन्तर होता है उसे ही धर्म कहकर जनता को बर्गलाने के पाप से बचे। धर्म का सच्चा स्वरूप स्वयं जाने और सारे देश को धर्म के सत्यरूप को बताने में प्रवृत्त हों ताकि हमारा राष्ट्र संगठित समृद्ध होकर सारे विश्व का सही मार्ग दर्शक बने।

-सम्पादक

सत्यम वद

-हितेश शुभम शर्मा

दूरदर्शन पर तथा अखबारों में बड़े जोर-शोर से प्रचार-प्रसार हो रहा है कि बिसाहड़ा काण्ड पर लेखक और साहित्यकार जो साहित्य अकादमी द्वारा सम्मानित हुए हैं, अपना सम्मान और पुरस्कार राशि अकादमी को लौटा रहे हैं। वस्तुतः आदमी कोई भी कार्य करता है तो वह या तो अपनी खुशी के लिए करता है या अपने स्वामी को खुश करने के लिए करता है। यह लेखक और साहित्यकार निश्चित ही अपनी खुशी के लिए यह सम्मान और पुरस्कार राशि नहीं लौटा रहे तो फिर किसकी खुशी के लिए लौटा रहे हैं। यह विचारणीय विषय है। और इसका डी.एन.ए. टैस्ट कराया जाना चाहिए। बिसाहड़ा काण्ड में गौहत्या की अफवाह पर अखलाक की हत्या कर दी गई। क्या वास्तव में गौहत्या हुई थी या केवल अफवाह थी और अगर गौहत्या हुई थी तो कुछ लोगों को नाराजगी होना स्वाभाविक था किन्तु किसी व्यक्ति की हत्या कर देना, कानून को अपने हाथ में लेना एक बहुत बड़ा अपराध है, जिसके लिए कोई माफी नहीं है। राज्य सरकार ने मुआवजे के रूप में अखलाक के परिवार को ४५ लाख रूपया दिया। मायावती जी ने ११ लाख रूपया दिया। अखलाक के एक बेटे को दिल्ली में नौकरी मिल गई। मकान भी मिल गया। दुख पर मरहम लगाया गया, जो एक सियासी कार्य था। क्या लेखक और साहित्यकार अखलाक की हत्या से दुखी है और इस कारण से अपने पुरस्कार और सम्मान लौटा रहे हैं अथवा वह अखलाक के परिवार को ५६ लाख रूपये मिलने से दुखी हैं। अखलाक के परिवार के एक लड़के को दिल्ली में नौकरी मिलने से दुखी हैं, उसको दिल्ली में मकान मिलने से दुखी है। प्रश्न उठता है किस दुख के कारण वह राज्य सरकार द्वारा दिया गया सम्मान और पुरस्कार राशि लौटा रहे हैं। अर्थात् वह क्या सन्देश देना चाहते है अगर वह गौहत्या की अफवाह पर अखलाक की हत्या काण्ड से दुखी हैं तो उन्हें अपनी कलम के द्वारा इस सम्बन्ध में जनजागरण करना चाहिए। वह स्वतन्त्र है यह लिखने के लिए कि गौहत्या हो अथवा नहीं। वह स्वतन्त्र है यह लिखने के लिए कि जो मुआवजा दिया गया। वह उचित था, कम था या बहुत ज्यादा था। अगर वह मुआवजा दिए जाने से दुखी है तो उनका दुख जायज नहीं है क्योंकि यह तो सरकार का काम है कि वह किसको क्या दे। उनको भी पुरस्कार राशि दी गई है। सम्मान पत्र भी दिया गया है, कुछ को पद्मश्री भी दी गई है। सम्मान, पुरस्कार राशि और पद्मश्री वापस करने से पहले प्रत्येक लेखक और साहित्यकार को यह स्पष्ट कर देना चाहिए था कि वह किस कारण से सम्मान और पुरस्कार की राशि वापस कर रहा है। जनता तो दिग्भ्रमित है कि अगर उन्हें गौहत्या से दुख हुआ है तो इसके विरोध में लिखते और अगर हत्या से दुखी है तो उसके विरोध में लिखते। मृत्यु के बाद अखलाक के परिवार को दी जाने वाली सुविधायें उनके गले नहीं उतर रही है तो उसके बारे में लिखते। अकादमी का अपमान करना समस्या का समाधान नहीं है। लेखक का काम है जन-जागरण करना और वह कलम के माध्यम से हर सन्दर्भ में विरोध अथवा समर्थन जनता तक पहुंचा सकता है और यदि किसी को प्रसन्न करने के लिए यह सम्मान वापस किए जा रहे हैं तो इसका कोई इलाज नहीं है। मैं सम्मान और पुरस्कार राशि को वापस किए जाने को उचित नहीं मानता। यदि एक हत्या के आधार पर सम्मान और पुरस्कार राशि वापस की जा रही है। तो मुजफ्फरनगर दंगे में ७३ लोग मारे गए थे तब यह सम्मान और पुरस्कार राशि वापस क्यों नहीं की गई। अभी दो पत्रकारों को गोली मार दी गई। एक पत्रकार जिन्दा जल गया तब यह सम्मान और पुरस्कार राशि वापस क्यों नहीं की गई। कश्मीर में सिक्खों का कत्ल कर दिया गया। कश्मीरी पंडितों को मारा गया और कश्मीर से बाहर खदेड़ दिया गया। तब लेखकों की अन्तर्आत्मा कहां गई थी, तब इन्होंने सम्मान और पुरस्कार राशि वापस क्यों नहीं की। ऐसी बहुत सी घटनाएं हैं, जो इस बिसाहड़ा हत्याकाण्ड से भी ज्यादा वीभत्स है। उन पर इन लेखकों और साहित्यकारों का ध्यान क्यों नहीं गया। सरकार को चाहिए इन साहित्यकारों का नाम लोट कर ले औ भविष्य में इन्हें किसी भी प्रकार का सम्मान न दिया जाए। समाचार पत्रों और पत्रिकाओं को चाहिए कि वह इन लेखकों और साहित्यकारों से सम्बन्धित कुछ भी प्रकाशित न करें। रात-दिन बम धमाके होते हैं, लोग मरते हैं, इन लेखकों और साहित्यकारों को उनकी चिन्ता नहीं होती। लेकिन राजनीतिक रंग देने के लिए अपनी भावना को सम्मान और पुरस्कार राशि लौटाने से जोड़ना सर्वथा असमर्थनीय है।

अभी गगनांचल नाम की पत्रिका आई है, जिसमें साहित्यकारों के नाम उल्लेखनीय हैं। कुछ साहित्यकार पूर्व में राजनयिक सेवा में रह चुके हैं। कुछ राजनेता रह चुके हैं। कुछ कुलाधिपति अथवा साहित्यिक संस्थाओं से सम्बन्धित हैं। वर्तमान के राज्यपाल का नाम भी लेखकों में सम्मिलित है और उनकी कविताओं को प्रमुखता से प्रकाशित किया गया है। यदि यह सब साहित्यकार सम्मानित किए गए हैं तो किसी को आश्चर्य नहीं होना चाहिए वर्तमान में सरकारी सेवा से निवृत्त प्रत्येक व्यक्ति कविता लिखना आरम्भ कर देता है क्योंकि अतुकांत कविता लिखने में, हाइकु लिखने में, क्षणिका लिखने में किसी परिश्रम की आवश्यकता नहीं पड़ती। साधारण बात को साधारण शब्दों में लिख देना ही अतुकान्त कविता है। छन्दबद्ध कविता लिखना, लयबद्ध गीत लिखना सरल नहीं है क्योंकि उसमें पिंगल का ध्यान रखना पड़ता है, मात्राओं की गणना करनी पड़ती है। सरकारी सेवानिवृत्त अधिकारी को इतना समय कहां है कि वह यह सब ज्ञान प्राप्त करें और तब कविता लिखे वह तो सीधी सादी बात लिखता है। और वह कविता हो जाती है। जो साहित्यकार १०० पुस्तकें लिख चुके हैं, सम्मानित होने में उनका नम्बर नहीं आता। क्योंकि उनकी पहुंच-पूंछ इतनी लम्बी नहीं होती कि वह दिल्ली दरबार तक पहुँच सके और दिल्ली दरबार में जिसकी पहुच नहीं है उसको सम्मान प्राप्त करने का अधिकार ही नहीं है, जिसका कोई राजनीतिक बाप नहीं है साहित्यकार कितना भी बड़ा क्यों न हो, सम्मान नहीं पाता, पुरस्कार नहीं पाता, और यह सेवानिवृत्त अधिकारी अथवा राजनयिक सेवानिवृत्ति के बाद एक साल में ही इतने बड़े साहित्यकार बन जाते हैं कि उनको पद्श्री तथा अनेकानेक साहित्यिक सम्मान और पुरस्कार प्राप्त होने लगते हैं, यह सब सम्पर्को का प्रभाव है, इसमें योग्यता का कोई मापदण्ड नहीं है। वस्तुतः जब कोई व्यक्ति प्रशासनिक सेवा में होता है, राजनयिक पद पर होता है, किसी विश्वविद्यालय का कुलाधिपति होता है अथवा किसी अन्य प्रतिष्ठित पद पर होता है और वह सम्बन्धित व्यक्तियों को लाभ पहुंचाने की स्थिति में होता है और राजनेताओं को साहित्यिक संस्थाओं के अध्यक्षों को किसी प्रकार से अपने पद के अनुसार अनुग्रहीत करता है। तब वह नेता जब पद्मश्री देने वाली स्थिति में होते हैं तब उस अनुग्रह को वापस कर सकते हैं और समझदार सेवानिवृत्त अधिकारी इस बात को समझता है और भुनाता है। अतः वह कवि ना होते हुए भी कविताएँ लिखने लगता है। कहानी किस प्रकार लिखता है यह अकेले में पूछेंगे तो बता दूंगा। और बड़े आराम से वह अपने द्वारा अनुग्रहीत व्यक्ति से अपने ऊपर अनुग्रह के रूप में पद्मश्री पा जाता है। वास्तविक कवि, लेखक, कहानीकार, व्यंग्यकार बाल-बाल रह जाते हैं। यह हमारे देश की विडम्बना है।

चुनाव प्रक्रिया चल रही है। बिहार में कई दिग्गजों की प्रतिष्ठा दांव पर है। चुनाव पहले भी हुए हैं लेकिन जैसे चुनाव इस बार हो रहे हैं, वह चाहे लोकसभा का हो, बिहार का हो अथवा दिल्ली का हो सबमें

शेष पेज ६ पर देखें....

धरोहर.....

उत्साह और कर्मठता की प्रतिमूर्त्ति -

ब्र० हरिशरण जी बाइबिल आचार्य

स्वामी धर्मेश्वरानन्द सरस्वती
मंत्री, आर्य प्रतिनिधि सभा
उ.प्र., लखनऊ।

लम्बा कद, सामान्य श्वेत, चमकती आँखें, लम्बी गर्दन वाणी में ओज एवं शरीर में स्फूर्ति, कठोरता के पर्यायवाची होकर उत्साह से किसी भी कार्य को करने में सदैव प्रयत्नशील रहने वाले ब्र० हरिशरण जी को कौन भुला सकता है ?वे शक्ति के पुज्य थे विद्या के सागर और धैर्य को सम्बल बनाकर सदैव वैदिक धर्म के प्रति बलिदान होने की तमन्ना संजोये रहते थे उनके विषय में किवंदन्तियों हैं कि वे चलते-फिरते मिश्नरी से वे जलती आग में कूदना जानते थे वे आर्य समाज के अनोखे प्रचारक थे जिसको अद्वितीय कहा जा सकता है आर्य समाज के उपदेशक ग्राम-ग्राम में नगर और शहरों में प्रचार करते हैं प्रधान/मंत्री बुलाते हैं माइक मंच पण्डाल की व्यवस्था होती है तथा विज्ञापन छपवाकर प्रचार किया जाता है कुछ उपदेशक अब अपने फोटो भी छपवाने लगे हैं विज्ञापन के अतिरिक्त मंच एवं होर्डिग में फोटो सहित प्रचार किया जाता है तब प्रचार होता है बाद में अच्छी दक्षिणा से सम्मानित होते हैं यह एक परम्परा सी बन गई है लेकिन आप देखें ब्र० हरिशरण जी बाईबिल कण्ठस्थ करके अपने कन्धे पर साँपों का पिटारा हाथ में डमरू बजाते हुए किसी भी चौराहे पर खड़े होकर जनता को एकत्रित कर लेना उनके लिए सरल था और पहले साँप दिखाना प्रारम्भ करने फिर ईसाइयों के खिलाफ भाषण देते और छपे पत्रक जिनमें ईसाई पादरियों के लिए शास्त्रार्थ का चैलेंज होता था बाँट दिये जाते थे बच्चे और युवकों की भीड़ पीछे-पीछे चलती थी फिर अगले चौराहे पर भीड़ एकत्रित हो जाती थी फिर प्रचार-भाषण देते थे इस प्रकार दिन में पाँच-छः स्थानों पर प्रचार करके अपने आश्रम आ जाते थे रॉची बिहार के सिमडेगा नामक स्थान पर आपका आश्रम है जो आज भी आपकी स्मृतियों को ताजा कर रहा है आपने पूरे बिहार में सीमान्त उड़ीसा में सन्थाल क्षेत्र में ईसाई मिश्नरी के दांत खट्टे कर दिये थे आपका नाम सुनकर पादरी भाग जाते थे आम ब्रह्मचारी थे अत्यन्त बलशाली थे गुरूकुल झज्जर के आचार्य पूज्य गुरूवर स्वामी ओमानन्द जी सरस्वती के पास अनुज सहपाठी थे आप गुरूकुल गौतमनगर नई दिल्ली में पढ़े थे बचपन से ही आप अत्यन्त निडर एवं साहसी थे आपके साथी राजपाल शास्त्री वैद्य जी गढ़मुक्तेश्वर वाले पुराने संस्मरण सुनाते रहते हैं उन्होंने बताया कि जब हम गुरूकुल गौतमनगर में पढ़ते थे। जो आज ऑल इण्डिया मेडिकल के पीछे हैं। उस समय वहाँ जंगल था ब्रह्मचारी खेतों में ही शौचादि के लिए जाते थे खेती होती थी आज वहाँ नगर बस गए हैं सायंकाल जब अपने साथियों के साथ जा रहे थे तभी सामने एक वृक्ष के नीचे कोई महात्मा अपने शिष्यों के साथ बैठा हुआ था उसके चेहरे और शिष्य मण्डली को देखकर ब्र० हरिशरण जी निडर थे बोले देखों पाखण्डी बैठा है और शिष्यों को भ्रमित कर रहा है इस ढोंगी साधु को यहां से भगाओ। महात्मा ने उनकी आवाज सुनी तो ब्र० हरिशरण जी एवं सभी साथियों को बुलाकर पूछा कहां पढ़ते हो?उत्तर-गुरूकुल में पढ़ते हैं। आपको गुरू जी ने सभ्यता नहीं सिखाई बड़ो से और महात्मा से कैसे बोलते हैं ?उत्तर-सिखाई है लेकिन आप तो पाखण्डी साधु हैं महात्मा नही। तुम मूर्ख हो फिर बच्चों जैसी बातें करते हो जाओ महात्मा से बहस नहीं किया करते। आप अपने महात्मा बनने का प्रमाण दो नहीं तो आप ढोंगी हैं पाखण्डी हैं ?उत्तर-अरे बच्चा जाओ तुम नहीं जानते अन्यथा मैं तुम्हें भस्म कर दूंगा। ब्र० जी ने कहा यदि आप भस्म कर दो सच्चे महात्मा अन्यथा नकली साधु हो और फिर देखना मेरा मंत्र ज्यादा प्रभावी है या आपका फिर वैद्य जी ने बताया कि मुझे गुरूकुल भेज दिया कि मेरे स्थान से एक पुड़िया ले आओ और महात्मा के सामने बैठ गए उसने डराने के लिए मंत्र पाठ किया और चक्कर लगाने शुरू किये कि अब भी मान जा अन्यथा ७वें चक्र पर भस्म हो जायेगा ब्र० जी तो निडर एवं साहसी तथा बहर्षि दयानन्द सरस्वती जी के अनुयायी थे जब कुछ भी नहीं हुआ तो ब्र० जी बोले अब मेरे मंत्र का चमत्कार देखों ?बस गायत्री मंत्र का पाठ किया १-२ मंत्र और बोले तथा उस पुडिया में राख (भस्म) मिलाकर एक चक्कर लगाया जैसे ही महात्मा के सामने आये थोड़ी सी भस्म डालकर कहा सावधान। सम्भलों अभी भस्म करता हूँ देखों वेदमंत्रों का चमत्कार बस फिर क्या था आगे की ओर आग की तरह लाल हो गया और छटपटाने लगे तभी पीछे की ओर आकर फिर मुख से कुछ कहा और भस्म छोड़ दी और कहा कि तीसरे क्रम में पूरे शरीर में आग लग जायेगी महात्मा ने हाथ जोड़कर क्षमा याचना की और पैरों में लेट गए बोले बस मैं हारा और आज जीते अब इस अग्नि को शान्त करो तो ब्र० जी बोले मुझे तो मंत्र चलानी आती है उतारना तो गुरू जी बतायेगें फिर उन्हें गुरू जी के पास गुरूकुल में लाये और गुरू जी को सारी कहानी सुनाई गुरू जी ने कहा गाय का गोबर लाओं और मंत्रपाठ करो तब मंत्र की शक्ति शान्त होगी और उससे भविष्य में ढोंग न करने की प्रतिज्ञा कराई यह थी म० दयानन्द के ब्र० की जीत और साधु फिर उधर कभी दिखाई नहीं दिया। इस प्रकार के म० दयानन्द की दीवाने ब्र० जी के चमत्कारों की कहानी बचपन से ही बड़ी विचित्र हैं कहते है कि '' होनहार वीरवान के होत चिकने पात'' जब बचपन में ग्राम में रहते थे तो कोई साँप दिखाई दे जाये जब तक उसे पकड़कर मार न दें पीछा नहीं छोड़ते थे कई बार साँप आगे-आगे ये पीछे-पीछे एक बार तो वृक्ष पर भी चढ़कर उसे नहीं छोड़ा। आपका जन्म स्थान मेरठ जिले की किठौर-हापुड़ मार्ग पर हनरालपुर कोटा ग्राम है जिसमें क्षत्रिय जाटों का बाहुल्य है आज भी वहां निडर बच्चे हैं हापुड़ के पास दादरी ग्राम में श्यामसिंह नामक एक व्यक्ति सांप के काटने की चिकित्सा किया करते थे आप वहां जाकर उनके शिष्य बने और उसकी चिकित्सा सीख ली सांप काटे की चिकित्सा करने लगे इससे निडरता और बढ़ गई आप लाठी चलाना - तलवार चलाना - निशानेबाजी में भी निपुण थे अच्छे पहलवान भी थे गुरूकुल में पढ़कर निर्भीकता से आपका साहस बढ़ता चला गया दिल्ली में जब कभी सम्मेलनों पर शोभायात्रा निकलती थी तो लाठी का प्रदर्शन आप किया करते थे।

मुस्लिम बाहुल्य क्षेत्र में भी निर्भीकता से नारे लगाते हुए अपनी शोभायात्रा पूरी करते थे स्वामी ओमानन्द जी ने एक दिन बताया कि सात सेर दूध की खीर बनाई थी कि दोनों का कार्य चल जायेगा लेकिन हरिशरण जी अकेले ही खा गए मुझे थोड़ी सी कहने पर दी इतनी अच्छी खुराक व्यायाम से ही पचा पाते हैं आपका स्वभाव दयालु था तथा गुरूकुल झज्जर के लिए प्रचार का कार्य करते थे लेकिन झगड़ा करने में उन्हें अच्छा लगता था इसलिए आचार्य (भगवानदेव जी) स्वामी ओमानन्द जी ने कहा कि ब्र० जी आपको सारी बाइबिल कण्ठस्थ करने का लाभ क्या हुआ ?अच्छा रहता ईसाई पादरी हिन्दुओं को ईसाई बना रहे हैं आप उधर ही जाकर कार्य करो आपने तत्काल आदेश का पालन किया और उधर जाकर सिमडेमा रॉची में आश्रम बनाया फिर पर्चे बनाये योजनायें बनाई ईसाईयों को विदेशों से पैसा आता है ये ब्र० जी खर्च कैसे चलायें सुरक्षा का डर नही खर्चे की समस्या थी बस सांप की चिकित्सा प्रारम्भ की दवाई बनाई उसे बेचते थे उसी से अपना भरण पोषण करते थे वानप्रस्थी सत्यमुनि जी जिन्हें आप पूर्व पढ़ चुके है रोहतक के ग्राम मालोठ के प्रधान शेरसिंह आर्य जी भी आपके साथ चले गए और दोनों ने शुद्धि का कार्य प्रारम्भ किया हजारों लोगों को वापस आर्य बनाया उसके फोटो भी वे दिखाते थे एक बार की घटना वानप्रस्थी जी सुना रहे थे कि ईसाईयों का जलूस निकल रहा था ब्र० जी ने पर्चे छपवाये ईसाईयों भारत छोड़ो, उन्हें दीवारों पर स्थान-स्थान पर चिपका दिया जलूस के आगे एक व्यक्ति उन पर्चो का छुटा रहा था कि वह ब्र० जी ने देख लिया आप अपने आश्रम के सामने खड़े थे तभी उसे रोककर मना किया वह नही माना तो हजारों की भीड़ के आगे उसे दोनों पादप्रहर से गिरा दिया वह सड़क पर बेहोश हो गया लोग भागे कि क्या हुआ ब्र० जी बोले हमारे पर्चे क्यों हटाते हो शान्त होकर जलूस निकालो अन्यथा यहां झगड़ा हो जायेगा उनका बड़ा पादरी आया और सोरी कहकर शान्त चला गया बोला अरे जानते नही यह आर्य समाजी है इनसे बचकर रहो। यह था ब्र०जी का प्रमाण वे सदैव वीरों की तरह जिये और वीरों की तरह ही मरे। मृत्यु का कोई समय निश्चित नहीं होता लेकिन उनका असमय में जाना आर्य समाज के लिए बहुत बड़ी क्षति थी वानप्रस्थी सत्यमुनि जी इधर आ गए और वे अकेले पड़ गए ब्र० देशपाल जी दीक्षित को उनके सहयोग हेतु भेजा वे भी समर्पित मिशनरी के प्रचारक थे जब वानप्रस्थी जी उनके बारे में बताते तो गुरूकुल ततारपुर में तब हम छात्रावस्था में पढ़ रहे थे हमारी इच्छा थी उनके दर्शन करके उनसे आशीर्वाद लेवेंग क्यों कि उनके विषय में हापुड़ क्षेत्र में उनकी प्रसिद्धि १९४७ के समय से ही वीरता की कहानियाँ बच्चों को हमारे पूर्वज सुनाकर उत्साहित करते थे कि आँखों से पट्टी बाँधकर चारों तरफ लोगों को खड़ा करके लाठी और तलवार का इतना सधा हुआ हाथ था कि सबसे बीच में लाठी निकल जानी थी लेकिन यदि कोई अपने स्थान से हट गया उसे ही चोट लगनी थी खाट के नीचे कबूतर हो और लाठी चला दें तो उन्हें उड़ने का अवसर नही मिलता था वही चुपचाप बैठने में ही जीवन की सुरक्षा समझता था ऐसे व्यक्तित्व के दर्शन भला कौन नहीं करना चाहेगा लेकिन क्या

शेष पेज ७ पर देखें....

देश के कर्णधार हमारे शिक्षक व शिष्य कैसे हों ?

मनमोहन कुमार आर्य, देहरादून

शिक्षा देने व विद्यार्थियों को शिक्षित करने से अध्यापक को शिक्षक व शिक्षा प्राप्त करने वाले विद्यार्थियों को शिष्य कहा जाता है। आजकल हमारे शिक्षक बच्चों को अक्षर व संख्याओं का ज्ञान कराकर उन्हें मुख्यतः भाषा व लिपि से परिचित कराने के साथ गणना करना सिखाते हैं। आयु वृद्धि के साथ-साथ बच्चा भाषा, कविता, गणित सहित विज्ञान व कला आदि विषयों को भी अपने शिक्षकों से पढ़ता है और आगे चल कर वह पुस्तकें पढ़कर व शिक्षकों के मार्गदर्शन से चिकित्सक, इंजीनियर, कम्प्यूटर सेवी, अध्यापक, व्यापारी व उद्योगपति आदि बन जाता है। हमारी वर्तमान जो शिक्षा प्रणाली है, उसमें बहुत कम लोग ही सत्य व चारित्रिक नियमों का पालन करने वाले बनते हैं। आजकल देखा जाता है कि बात पर झूठ बोलना एक आम बात हो, गई है। यदि यह कार्य अशिक्षित करते तो समझ में आता, परन्तु बड़ी-बड़ी उपाधि के धारणकर्ता व उच्च पदों पर प्रतिष्ठित लोग प्रायः असत्य बोलते हैं व अपने-अपने कार्यो में मिथ्याचार व भ्रष्टाचार आदि में लिप्त पाये जाते हैं। इस असत्य व्यवहार व मिथ्याचार का कारण हमें एक ओर शिक्षा प्रणाली व दूसरी ओर शिक्षकों का निजी आचारण, जीवन व चरित्र अनुभव होता है। जैसा शिक्षक होगा वैसा ही कुछ व अधिक प्रायः शिष्य बनता है।

हमारा देश ज्ञान की दृष्टि से अन्य देशों से अधिक भाग्यशाली रहा है। प्राचीन काल में हमारे देश के लोगों के जीवन व चरित्र आदर्श व महान होते थे जिसका प्रमुख कारण वेदों का ज्ञान, विद्यार्थियों द्वारा उसका अध्ययन व आचार्यो के उच्च जीवन एवं चरित्र होते थे। आज १ अरब से अधिक जनसंख्या हो जाने पर भी किसी के बारे में यह कहना कठिन है कि अमुक व्यक्ति सत्य का ही व्यवहार करता है एवं असत्य का किंचित व्यवहार नहीं करता और इसका चरित्र आदर्श व बेदाग है। इसका कारण हमें शिक्षा में वैदिक मूल्यों की उपेक्षा व पाश्चात्य मूल्यों की बहुलता सहित हमारे शिक्षकों का ज्ञान व अज्ञानवश पाश्चात्य मूल्यों के प्रति प्रेम अनुभव होता है। आईये, वैदिक काल में अध्यापक और अध्यापिकायें कैसे होते थे व होने चाहिये, यह वेदों के मर्मज्ञ, आदर्श जीवन व चरित्र के धनी महर्षि दयानन्द के शब्दों में जानते हैं।

महाभारतान्तर्गत उद्योगपर्व विदुरप्रजागर के अध्याय ३३ के ६ श्लोकों को प्रस्तुत कर वह सत्यार्थ प्रकाश के चतुर्थ समुल्लास में लिखते हैं कि जिस को आत्मज्ञान सम्यक् हो अर्थात् जो निकम्मा आलसी कभी न रहे, सुख दुःख, हानि लाभ, मान-अपमान, निन्दा स्तुति में हर्श शोक कभी न करे, धर्म ही में नित्य निश्चित रहे, जिस के मन को उत्तम-उत्तम पदार्थ अर्थात् विषय सम्बन्धी वस्तुयें आकर्षित न कर सकें, वही पण्डित वा शिक्षक कहाता है। सदा धर्मयुक्त कर्मो का सेवन, अधर्मयुक्त कामों का त्याग ईश्वर, वेद, सत्याचार की निन्दा न करने हारा, ईश्वर आदि में अत्यन्त श्रद्धालु हो, वही पण्डित वा अध्यापक-अध्यापिका का कर्तव्य-अकर्तव्य अथवा कर्म है। जो कठिन विषय को भी शीघ्र जान सके, बहुत कालपर्यन्त शास्त्रों को पढ़े सुने और विचारे, जो कुछ जाने उस को परोपकार में प्रयुक्त करे, अपने स्वार्थ के लिये कोई काम न करे, बिना पूछे वा बिना योग्य समय जाने दूसरे के अर्थ में सम्मति न दे, ऐसा व्यक्ति ही प्रथम प्रज्ञान पण्डित, शिक्षक, अध्यापक व अध्यापिका को होना चाहिये। अध्यापक व अध्यापिका ऐसे हों कि जो प्राप्ति के अयोग्य की इच्छा कभी न करे, नष्ट हुए पदार्थ पर शोक न करे, आपत्काल में मोह को न प्राप्त हो अर्थात व्याकुल न हों। यह गुण बुद्धिमान पण्डित के हैं और ऐसे ही अध्यापक व अध्यापिकायें होंवे। जिसकी वाणी सब विद्याओं और प्रश्नोत्तरों के करने में अतिनिपुण व विचित्र, शास्त्रों के प्रकरणों का वक्ता, यथायोग्य तर्क और स्मृतिमान्, ग्रन्थों के यथार्थ अर्थ का शीघ्र वक्ता हो वही पण्डित वा अध्यापक कहलाता है। जिस व्यक्ति की प्रज्ञा सुने हुए सत्य अर्थ के अनुकूल और जिस का श्रवण बुद्धि के अनुसार हो, जो कभी आर्य अर्थात् श्रेष्ठ धार्मिक पुरुषों की मर्यादा का छेदन न करे, वही पण्डित वा अध्यापक आदि संज्ञा को प्राप्त होवे। प्रकरण की समाप्ति पर महर्षि दयानन्द लिखते हैं कि जहां ऐसे-ऐसे स्त्री पुरुष पढ़ाने वाले होते हैं वहां विद्या धर्म और उत्तमाचार (सत्य भाषण एवं मिथ्याचार-भ्रष्टाचार रहित व्यवहार आदि) की वृद्धि होकर प्रतिदिन आनन्द ही बढ़ता रहता है। हमारे शिक्षक और बुद्धिमान लोग स्वयं जान सकते हैं कि शिक्षक व अध्यापक-अध्यापिकाओं के इन गुणों में से कितने गुण आजकल के शिक्षकों में पाये जाते हैं ?क्या शिक्षकों के महर्षि दयानन्द वर्णित यह गुण आज अप्रासंगिक हो गये हैं?ऐसा नहीं है। इसका प्रथम कारण तो हमारे शिक्षाविदों की इनसे अनभिज्ञता व दूसरा पाश्चात्य मूल्यों के प्रति गहन प्रेम है और इसके अतिरिक्त शिक्षण व्यवसाय से जो सुख सुविधायें उन्हें मिल रही है, उनका राग भी एक प्रमुख कारण है। हम महर्षि दयानन्द के प्रति इन वैदिक, सनातन व भारतीय मूल्यों को महाभारत से निकाल कर हिन्दी में अर्थ सहित जनसाधारण में प्रस्तुत करने के लिए सभी देशवासियों पर उनका उपकार मानते हैं। महर्षि द्वारा प्रस्तुत विचारों पर ध्यान देने पर हमें उनके गुरू प्रज्ञाचक्षु स्वामी विरजानन्द सरस्वती और स्वयं स्वामी दयानन्द ही सच्चे अध्यापक, शिक्षक, गुरू व आचार्य और इन सभी गुणों से सम्पन्न दिखाई देते हैं।

अध्यापकों के गुणों का वर्णन करने के बाद वह पढ़ाने में अयोग्य मूर्ख शिक्षकों का वर्णन भी करते हैं जिसका आधार भी उन्होंने महाभारत के उद्योगपर्व के अध्याय ३३ के दो श्लोकों संख्या ३० व ३६ को बनाया है। वह लिखते हैं कि जिसने कोई शास्त्र न पढ़ा न सुना, अतीव घमण्डी, दरिद्र होकर बड़े-बड़े मनोरथ करने हारा, बिना कर्म से पदार्थो की प्राप्ति की इच्छा करने वाला हो, उसी को बुद्धिमान लोग मूढ़ कहते है। ऐसे लोग पढ़ाने योग्य नहीं होते। आजकल समाज में ऐसे बहुत से अध्यापक हमें देखने को मिल जाते हैं। दूसरे श्लोक का अर्थ करते हुए वह लिखते हैं कि जो बिना बुलाये सभा व किसी के घर में प्रविष्ट हो, उच्च आसन पर बैठना चाहे, बिना पूछे सभा में बहुत सा बोले, विश्वास के अयोग्य वस्तु वा मनुष्य में विश्वास करे, वही मूढ़ और सब मनुष्यों में नीच मनुष्य कहाता है। इन २ श्लोकों के अर्थो पर टिप्पणी कर दयानन्द जी कहते हैं कि जहां ऐसे पुरुष अध्यापक, उपदेशक, गुरु और माननीय होते हैं वहां अविद्या, अधर्म, असभ्यता, कलह, विरोध और फूट बढ़ कर दुःख ही बढ़ता जाता है। शिक्षक दिवस अभी ३ दिन पूर्व ही व्यतीत हुआ है। हम समझते हैं कि प्रत्येक शिक्षक दिवस पर शिक्षक के इन गुणों व अवगुणों पर विचार कर अवगुणों के त्याग व गुणों के ग्रहण की सभी शिक्षकों को प्रतिज्ञा लेनी चाहिये।

विद्यार्थियों के लक्षण भी महर्षि दयानन्द ने महाभारत के आधार पर लिखे हैं। वह है कि शरीर और बुद्धि में जड़ता, नशा, मोह, किसी वस्तु में फंसावट, चपलता और इधर-उधर की व्यर्थ कथा करना सुनना, पढ़ते पढ़ाते रूक जाना, अभिमानी, अत्यागी होना ये सात दोष विद्यार्थियों में होते हैं। जो ऐसे दोषों से युक्त विद्यार्थी होते हैं, उनको विद्या कभी नहीं आती। सुख भोगने की इच्छा करने वाले को विद्या कहां?और विद्या पढ़ने वाले को सुख कहां?क्योंकि विषय-सुखार्थी विद्या को और विद्यार्थी विषयसुख को छोड़ दें। ऐसा किये बिना विद्या कभी नहीं आ सकती। कैसे विद्यार्थियों को विद्या आती है, इसका उत्तर है कि जो सदा सत्याचार में प्रवृत्त, जितेन्द्रिय और जिन का ब्रह्मचर्य सच्चा व अखण्डित हो, वे ही विद्वान होते हैं। इसलिये शुभ लक्षणयुक्त अध्यापक और विद्यार्थियों को होना चाहिये। महर्षि दयानन्द अपने विचार व मान्यतायें बताते हुए लिखते हैं कि अध्यापक लोग ऐसा यत्न किया करें कि जिससे विद्यार्थी लोग सत्यवादी, सत्यमानी, सत्यकारी सभ्यता, जितेन्द्रिय, सुशीलतादि शुभगुणयुक्त शरीर और आत्मा का पूर्ण बल बढ़ा के समग्र वेदादि शास्त्रों में विद्वान हों। सदा उन की कुचेष्टा छुड़ाने में और विद्या पढ़ाने में चेष्टा किया करें और विद्यार्थी लोग सदा जितेन्द्रिय, शान्त, पढ़ानेहारों में प्रेम, विचारशील, परिश्रमी होकर ऐसा पुरुषार्थ करें जिससे पूर्ण विद्या, पूर्ण आयु, परिपूर्ण धर्म और पुरुषार्थ करना आ जाय। यह कार्य व इनको करके अध्यापक ब्राह्मण वर्ण के कहलाते है।

हम समझते हैं कि महर्षि दयानन्द के उपर्युक्त विचारों व मान्यताओं में आदर्श गुरू व शिष्य का चित्र उपस्थित हुआ है। हमारे शिक्षाविदों को इस पर विचार कर इसका शिक्षा प्रणाली में समावेश करना चाहिये। कम आयु के बच्चों में सदाचार व सदग्रन्थों वेद, दर्शन, उपनिषद, मनुस्मृति एवं सत्यार्थप्रकाश आदि की शिक्षा आवश्यक है। इनको पूर्ण वा आंशिका ही पाठ्यक्रम में सम्मिलित किया जाना चाहिये तभी हमें अच्छे शिक्षक व शिष्य प्राप्त होंगे। समूचे देश में संस्कृत अनिवार्य विषय के रूप से पढ़ाई जाये, इससे शिक्षा की बहुत सेवा होगी। इसी के साथ लेख को विराम देते हैं।

आर्य समाज नवाबगंज गोण्डा का वार्षिकोत्सव

आर्य समाज नवाबगंज गोण्डा का वार्षिकोत्सव आगामी १७ से २० नवम्बर, २०१५ को स्थानीय डी.ए.वी. कालेज के प्रांगण में मनाया जायेगा इस अवसर पर आर्य जगत के सुप्रसिद्ध वैदिक प्रवक्ता डा. व्यास नन्दन शास्त्री मुजफ्फर नगर, डॉ. कैलाश कर्मठ कलकत्ता क्षमा आर्या इटावा संजीव रूप आर्य भजनोपदेशक बदायूँ से पधार रहे हैं। आर्य समाज के मंत्री श्री सत्य प्रकाश नेबताया कि प्रातः ८ बजे से ११ बजे तक यज्ञ एवं वेद प्रवचन का कार्यक्रम आर्य समाज मन्दिर में होगा तथा सायंकाल एवं दोपहर का कार्यक्रम डी.ए.वी. कालेज के परिसर में होगा।

क्या सरदार पटेल मुस्लिम- विरोधी थे?

सूर्यदेव चौधरी

जिस गुजरात की धरती पर राष्ट्र-पितामह महर्षि दयानन्द और राष्ट्र-पिता महात्मा गाँधी पैदा हुए, उसी वीर-प्रसू धरती पर सरदार पटेल का भी जन्म हुआ था। राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी एवं पंडित नेहरू के बाद वे तीसरे कद्दावर एवं मान्य नेता थे। वे उन महान नेताओं में से एक थे, जिन्होंने देश को विदेशी दासता से मुक्त कराने के लिए निःस्वार्थ भाव से अपने सम्पूर्ण जीवन को समर्पित कर दिया। आधुनिक भारत के निर्माण में उनकी भूमि का असाधारण थी। यदि वे न होते तो आज भारत भी वह न होता, जो दीख रहा है। उन्होनें स्वतंत्र भारत के प्रथम गृहमंत्री एवं उपप्रधानमंत्री का पद सुशोभित किया और दक्षता एवं सफलतापूर्वक दायित्वों का निर्वहन किया। वे आजीवन केवल और केवल राष्ट्र-हित की बात सोचते रहे और उसके अनुकूल ही आचरण किया। राष्ट्र-हित के विरूद्ध कोई भी कार्य या कदम उन्हें असह्य था। इसमें वे हिन्दू-मुस्लिम का भेद-भाव नहीं करते थे। भारत की एकता तथा हिन्दू-मुस्लिम भाईचारे के प्रति सरदार पटेल की कट्टर निष्ठा थी। उनकी राष्ट्र-भक्ति संदेह से परे थी। वे कट्टर राष्ट्रवादी थे। उन्होंने सदा निष्पक्ष एवं निर्वैर होकर कार्य किया। लेकिन जिन्ना एवं मुस्लिम लीग की राष्ट्र-विरोधी गतिविधियों के वे कट्टर विरोधी थे। यह उनकी राष्ट्र-निष्ठा का प्रमाण था, मुसलमानों के प्रति उनके मन में कोई पूर्वाग्रह या दुराग्रह नहीं था। फिर भी जीवन के अन्तिम क्षणों में वे विवादों से बच नहीं पाए। जैसा कि अक्सर देखा जाता है कि निष्पक्षता एवं सहृदयता के बावजूद महापुरुषों के साथ कोई न कोई विवाद जुड़ ही जाता है। सो सरदार पटेल के साथ भी हुआ। उन पर भी साम्प्रदायिकता का आरोप लगा।

लोगों ने सरदार पटेल पर हिन्दू-समर्थक एवं मुस्लिम-विरोधी होने का आरोप लगाया। इनमें अधिकांश तो वैसे हैं जिन्होंने धर्म-निरपेक्षता के नाम पर सिर्फ अल्पसंख्यकपरस्ती दिखाई और बहुसंख्यकों को सदा तिरस्कृत किया। यानी छद्म-धर्म निरपेक्षतावादियों ने एक कट्टर राष्ट्रवादी व्यक्ति पर हिन्दू-समर्थक एवं मुस्लिम विरोधी होने का आरोप लगाकर उन्हें बदनाम किया। दुख की बात तो यह है कि कुछ मान्य एवं बड़े नेता भी इसमें शामिल हो गए थे, जिनमें मौलाना अबुल कलाम आजाद एवं जय प्रकाश नारायण का नाम लिया जा सकता है। यह अलग बात है कि बाद में उन लोगों ने मान लिया कि पटेल के बारे में उनके विचार गलत थे। एक बार तो गाँधी जी को भी पटेल की धर्म-निरपेक्षता पर संदेह पैदा हो गया था। उन्होंने सरदार पटेल पर मुस्लिमों के प्रति असहिष्णु होने का आरोप लगाया था। यह बात यरवदा जेल में गाँधी जी एवं पटेल की हुई बातचीत में उजागर हुई है। यह बातचीत ३० मार्च १९३२ को हुई थी। गाँधी जी के सचिव महादेव देसाई की डायरी में ऐसा जिक्र मिलता है। लेकिन बाद में पटेल के बारे में गाँधी का भ्रम दूर हो गया और तब उन्होंने कहा- 'सरदार को मुसलमान विरोधी कहना सच्चाई का उपहास उड़ाना है।' राजाजी (राज गोपालाचारी) ने भी २७-११-७१ के अपने पत्र 'स्वराज्य' में लिखा था- 'पटेल के बारे में यह धारण बन गई थी। कि वे मुसलमानों के प्रति कठोर व्यवहार करेंगे। यह गलत धारण थी।'

अब प्रश्न यह है कि क्या सचमुच सरदार पटेल मुस्लिम-विरोधी थे ?इस प्रश्न का उत्तर हम उनके जीवन की घटनाओं और उनके द्वारा व्यक्त विचारों में ढूँढ़ने का प्रयास करते हैं। अंग्रेज हिन्दू-मुस्लिम एकता एवं भाईचारे को समाप्त करने के लिए तरह-तरह के प्रयास कर रहे थे। सरदार पटेल अंग्रेजों की इस चाल को समझ गए। सन् १९२१ में भड़ौच में अपने दिए गए एक भाषण में लोगों को इसके प्रति सावधान करते हुए पटेल ने कहा था- 'हिन्दू-मुस्लिम एकता अभी एक कोमल पौधे की तरह है। एक लम्बे अर्से तक हमें इसे बहुत सावधानी से पालना होगा क्योंकि हमारे दिल अभी उतने साफ नहीं हुए हैं, जितने होने चाहिए।' आगे उन्होंने हिन्दुओं से अपील करते हुए कहा कि उनका कर्त्तव्य है कि वे 'मुसलमान समुदाय की अच्छाइयों में पूर्ण विश्वास व्यक्त करके मुसलमानों को इस्लाम की रक्षा के लिए हर सम्भव सहायता प्रदान करें'। अगर पटेल के मन में मुसलमानों के लिए दुर्भावना होती, तो वे ऐसी बातें कदापि नहीं करते। उनका तो स्पष्ट विचार था कि जिस प्रकार 'प्रकृति धर्म के आधार पर भेदभाव नहीं करती है,' उसी प्रकार मनुष्य को भी धर्म के आधार पर भेदभाव नहीं करना चाहिए। यदि पटेल मुस्लिम विरोधी होते तो, वे कदापि यह नहीं कहते कि 'बहुसंख्यकों (हिन्दुओं) की सद्भावना अल्पसंख्यकों का सर्वश्रेष्ठ कवच है'।

१९३१ में कराची में कांग्रेस का वार्षिक अधिवेशन हुआ था। इस अधिवेशन में नागरिकों के मूल अधिकारों का एक मसविदा स्वीकार किया गया था। बाद में आजाद भारत के संविधान में इसे शामिल कर लिया गया। इस अधिवेशन में अध्यक्षीय भाषण करते हुए सरदार पटेल ने कहा था- 'पर सबसे पहले हिन्दू-मुस्लिम या साम्प्रदायिक एकता का सवाल आता है'। यदि सरदार के मन में मुसलमानों के प्रति दुर्भावना होती, तो वे ऐसा कभी नहीं कहते। यही नहीं, मूलभूत अधिकारों वाली संविधान की धारा-२५ में सरदार पटेल ने ही 'प्रचारित करना' शब्द जुड़वाया था, जबकि संविधान प्रारूप समिति के महत्वपूर्ण सदस्य डा० के०एम० मुंशी तथा पूर्व कांग्रेस अध्यक्ष राजर्षि पुरुषोत्तमदास टण्डन इस शब्द के प्रबल विरोधी थे। साथ ही, संविधान सभा की अल्पसंख्यक समिति के अध्यक्ष की हैसियत से पटेल ने सर्वधर्म मैत्री को प्रमुखता देने पर जोर दिया। ईसाई एवं मुसलमानों को धर्म-प्रचार का अधिकार देकर पटेल ने साम्प्रदायिक विशेषकर मुसलमानों के प्रति सद्भावना का ही परिचय दिया था। उनकी साम्प्रदायिक सद्भावना विशेषकर मुसलमानों के प्रति उनकी सहृदयता की मिशाल यहीं खतम नहीं होती है। अंग्रेजों की पहल कर कांग्रेस एवं लीग की कार्यकारिणी बनाने की बात पर लीग ने यह शर्त रख दी कि सारे मुस्लिम सदस्य केवल लीग से होंगे। इस शर्त को अस्वीकार करते हुए सरदार पटेल ने कहा था- ' यदि यह बात स्वीकार कर ली गई, तो भविष्य में किसी कांग्रेसी मुसलमान को कोई पद नहीं मिल पाएगा। भले ही लीग सिर्फ मुसलमानों की संस्था हो, पर कांग्रेस के दरवाजे किसी मुसलमान के लिए कभी बन्द नहीं होंगे और न ही उन्हें किसी अवसर या पद से वंचित किया जाएगा। यह घटना सिद्ध करती है कि मुसलमानों के लिए सरदार पटेल के मन में कितना प्रेम था ?

सरदार पटेल ने कभी भी मुसलमानों के साथ अन्याय नहीं किया। भारत-विभाजन से उत्पन्न साम्प्रदायिक दंगों के समय सरदार पटेल का आचरण अत्यन्त संयमित एवं मुसलमानों के प्रति सहृदय था। अनेक घटनाओं से यह बात प्रमाणित है कि सरदार पटेल ने मुसलमानों पर ज्यादती के लिए हिन्दुओं एवं सिखों को बख्शा नहीं और घिरे हुए मुसलमानों की मदद भी की। उन पर हिन्दू अधिकारियों पर अधिक विश्वास करने का आरोप भी गलत है। विशेष पुलिस बल का इंस्पेक्टर जनरल एक मुसलमान था, जो पटेल का विश्वास पात्र था। दिल्ली के पहले चीफ कमिश्नर के रूप में पटेल ने एक मुसलमान खुर्शीद आलम को नियुक्त किया था। यही नहीं, उन्होंने एक भी मुस्लिम अधिकारी या पुलिस अफिसर को शक के आधार पर हटाया नहीं था। सही-गलत, जो भी अधिकारी थे, पटेल ने उन्हीं से काम चलाया था। यह सत्य है कि साम्प्रदायिकता का विष फैलाने के लिए वे जिन्ना की भर्त्सना करते थे और मुस्लिम लीग से उन्हें घृणा थी, लेकिन मुस्लिम समुदाय के लिए उनके मन में घृणा का भाव नहीं था। इसीलिए उन्होंने कहा था-'भारत में सात करोड़ मुसलमान हैं, वे सुरक्षित और स्वतंत्र रहें, यह देखना हमारा काम है'।

इस विवेचना से यह स्पष्ट है कि सरदार पटेल मुसलमानों के विरोधी नहीं थे। उनके मन में मुसलमानों के प्रति कोई पूर्वाग्रह, दुराग्रह या दुर्भावना नहीं थी। मुसलमानों के लिए उनके मन में कोई घृणा नहीं, बल्कि अतिशय प्रेम था, जिसकी झलक उनके कथनों में मिलती है।

आर्य समाज बुढ़ाना, मुजफ्फर नगर एवं जिला आर्य प्रतिनिधि सभा मुजफ्फर नगर का कार्यकर्ता सम्मेलन एवं यज्ञोत्सव

आर्य समाज बुढ़ाना मुजफ्फर नगर द्वारा दिनांक १६ से १६ नवम्बर, २०१५ तक वेद पारायण यज्ञ होना सुनिश्चित है। यज्ञ की ब्रह्मा डा. पवित्रा आर्या एवं वेदपाठी गुरूकुल सासनी की ब्रह्मचारिणियां होंगी। नित्य प्रवचन महान तपस्वी पूज्य स्वामी परमानन्द जी सुलमा शास्त्री डा. नरेन्द्र वेदालंकार श्रीमती सविता जी (तिरपुडा) के प्रवचन होंगे। यज्ञ एवं प्रवचना १६.११.१५ को प्रातः ८ से ११ बजे तक आर्य कन्या इण्टर कालेज पैठ बाजार बुढ़ाना, दि. १७.११.१५ को डी.ए.वी. कालेज, बुढ़ाना १८.११.१५ डी.ए.वी. कालेज बुढ़ाना एवं १६.११.१५ को यज्ञ की पूर्णाहुति डी.ए.वी. पब्लिक स्कूल बुढाना में होगी।

नित्य सायंकाल प्रवचन आर्य समाज पैठ बाजार बुढ़ाना में रात्रि ७ से १० बजे तक होंगे।

आर्य प्रतिनिधि उत्तर प्रदेश के प्रधान श्री देवेन्द्रपाल वर्मा कार्यक्रम के अध्यक्ष होंगे। सभी जिज्ञासु आर्य नरनारी इस कार्यक्रम में उपस्थित होकर ज्ञानार्जन करने हेतु सादर आमंत्रित हैं।

भान सिंह आर्य प्रधान — **अरविन्द कुमार** मंत्री — **अरुण कुमार** कोषाध्यक्ष

जिला आर्य प्रतिनिधि सभा, मुजफ्फर नगर

''है यह अमूल्य निधि, सत्यार्थ प्रकाश''

है यह अमूल्य निधि महर्षि दयानन्द कृत सत्यार्थ प्रकाश।
जिससे होता है अज्ञान, अंधविश्वास, पाखण्ड का सर्वनाश।।
जब से हुआ है यह शिक्षाप्रद, प्रेरणाप्रद, ज्ञान पुंज ग्रंथ प्रकाशित।
वेद जो ईश्वरीय ज्ञान है, उसका विश्व में फैल रहा है प्रकाश।।
है यह अमूल्य निधि महर्षि दयानन्द कृत सत्यार्थ प्रकाश।

इस महान ग्रंथ में है प्रेरक जीवनोपयोगी चौदह समुल्लास।
जिसको पढ़ने से मिलता है सद्ज्ञान और मन में बढ़ता है उल्लास।।
है यह चारों वेदों का सार और सब अति उत्तम सामग्री का संग्रह।
इसमें मिलते है हीरे, मोती जवाहरात करने से सतत् प्रयास।।
है यह अमूल्य निधि महर्षि दयानन्द कृत सत्यार्थ प्रकाश।

जो भी उलझने, समस्याएं आपके जीवन व गृहस्थ में आवें।
ढूँढों इसमें मिलेगा समाधान इसलिए पढ़ने का निकालो अवकाश।।
महर्षि का है यह सब से विशेष, अमूल्य अनुपम अनोखा ग्रंथ।
इसमें विखरी जीवन की वे सभी बातें, जो है खास खास।।
है यह अमूल्य निधि महर्षि दयानन्द कृत सत्यार्थ प्रकाश।

इसके पढ़ने से कितनों के जीवन बदल गये, बने पुरूष महान।
वैसे तो उदाहरण अनेकों है पर गुरूदत्त, श्रद्धानन्द, अमीचन्द है खास।।
जब इसको पढ़ें समझें और आचरण करें इसमें लिखे अनुसार।
तब सम्पूर्ण विश्व बन जायेगा स्वर्ग धाम और हो जायेगा सब दुखों का ह्रास
है यह अमूल्य निधि महर्षि दयानन्द कृत सत्यार्थ प्रकाश।

इसके साथ नवलखा महल उदयपुर का भी है गौरवपूर्ण स्वर्णिम इतिहास।
यहीं बैठकर देव दयानन्द ने लिखा था, यह अमर ग्रंथ सत्यार्थ प्रकाश।।
इसी के प्रचारार्थ महर्षि ने मुम्बई में बनाई आर्य समाज, करने वेदों का प्रकाश।
'खुशहाल' करना चाहता है इसी का प्रचार जिससे अज्ञान, अंधविश्वास का हो जाये विनाश।।
है यह अमूल्य निधि महर्षि दयानन्द कृत सत्यार्थ प्रकाश।

-खुशहाल चन्द्र आर्य
गोविन्दराम आर्य एण्ड संस, १८०, महात्मा गांधी रोड
दो तल्ला कोलकता-७०००० ७

आर्य समाज सुभाष नगर का 41वाँ वार्षिकोत्सव

आर्य समाज सुभाष नगर फैजाबाद का ४१वाँ वार्षिकोत्सव बड़े ही हर्षोल्लास के साथ आगामी १५ से १६ नवम्बर, २०१५ को स्थानीय आर्य समाज के सभागार में मनाया जायेगा। जिसमें प्रातः ८ बजे से १२ बजे तक वेद मंत्रों द्वारा चतुर्वेद महायज्ञ एवं भजन व प्रवचन होंगे। यज्ञ आचार्या बहन पवित्रा शास्त्री एवं शिष्यायें आर्य कन्या गुरुकुल महाविद्यालय, हाथरस द्वारा तथा सायंकाल ६ बजे से १० बजे तक वेद प्रवचन होंगे। उपरोक्त कार्यक्रम में आचार्य डा. शिवदत्त आर्य सुल्तानपुर, पं. विमल किशोर आर्य वैदिक प्रवक्ता-लखनऊ, पं. राधेश्याम आर्य बस्ती एवं भजनोपदेशक, पं. संजीव रूप बदायू, पं. भानु प्रकाश जी बरेली भाग ले रहे हैं।

पृष्ठ.३ का शेष भाग...

पता था कि सूचना भयंकर रूप में सुनने को मिलेगी गुरूकुल ततारपुर में तार द्वारा सूचना आई उस समय फोन व्यवस्था सर्वत्र सुलभ नहीं थी, कि ब्र० हरिशरण जी की मृत्यु हो गई है। तुरन्त वानप्रस्थी सत्यमुनि जी वहां गए और उनकी जानकारी ली पता चला आर्य समाज का प्रचार करते हुए सांप दिखा रहे थे और भाषण भी दे रहे थे एक सांप नया पकड़ा था उसके दांत नही तोड़े थे वह हाथ में था उसने बात-बात में काट लिया वे नमक मिर्च-मीठा कुछ नहीं खाते थे पहले भी सांप काट लेते थे लेकिन विष प्रभाव नही करता था लेकिन आज हालत बिगड़ गई तथा आँखों के आगे अन्धेरा छा गया उन्होंने भाषण बीच में ही बन्द किया और आश्रम आ गए तब तक अन्धे हो चुके थे पूरे शरीर में विष फैल चुका था क्योंकि वहां बन्धन का स्थान नहीं था अपनी दवाई ली तो उल्टी हो गई फिर वाणी भी बन्द हो गई उन्होंने इशारे से इंजेक्शन को कहा तो अस्पताल ले गए वहां डाक्टर ईसाई थे वे तो इस दिन की प्रतीक्षाकर रहे थे अतः वही दुआ जो वे चाहते थे अपना क्षेत्र नहीं था म० दयानन्द सरस्वती की तरह उन्हें भी अस्पताल के स्टॉप ने चिकित्सा का पूरा ध्यान नही दिया और वह वीर नर पुँभव ब्रह्मचारी ईसाई मिश्नरी के विरोध में प्रचार करते हुए बलिवेदी पर बलिदान हो गए।

गुरूकुल परिवार में शोक छा गया स्वामी सत्यमुनि जी सुनते ही विहार उधरो चले गए थे हम इधर शोकमग्न होकर शान्ति यज्ञ करते रहे उनके परिवार से भी उनके बड़े भाई श्री प्रताप सिंह जी छोटे भाई श्री निरंजन सिंह जी भी गुरूकुल ततारपुर आये थे। पूज्य स्वामी ओमानन्द जी को सबसे अधिक कष्ट हुआ था उन्होंने एक लेख लिखा था कि -

''वीर ब्रह्मचारी का बलिदान'' आप इसी से आत्मीयता का परिज्ञान कर सकते हैं अभी सुधारक में श्री विरजानन्द जी दैवकरणि ने भी उन्हें स्मरण करते हुए एक लेख लिखा है स्वामी जी की इच्छा थी कि उनपर एक पुस्तक लिखी जाये और यह इच्छा अधूरी रह गई देखों प्रभु की इच्छा हुई तो कभी अवश्य में वे पूरी होगी मैं ऐसे ब्र० गुरूकुलीय परम्परा को सम्मान दिलाने वाले समाज के लिए अहर्निशतिल की तरह जलने वाले विद्वान् उपरेक्षक को आर्य प्रतिनिधिसभा उ०प्र० एवं गुरूकुल परम्परा की ओर से हार्दिक श्रद्धाजंली समर्पित करता हूँ।

संचालक
गुरूकुल महाविद्यालय पूठ
गढ़मुक्तेश्वर - हापुड़

पृष्ठ.२ का शेष भाग...

मर्यादा का उल्लंघन हो रहा है। बिहार में भारतवर्ष के प्रधानमंत्री को खुलेआम गालियाँ दी जा रही है, कोई महापिशाच कहता है, कोई शैतान कहता है, कोई धोखेबाज कहता है। यू.पी. के एक कद्दावर मंत्री तो कुत्ते के बच्चे का बड़ा भाई बताने से भी नहीं चूकते और हत्यारा तो वह कई बार कह चुके हैं। पारिवारिक सन्दर्भो में भी वो टीक्का टिप्पणी करते रहते हैं, जिस तरह के जहर प्रधानमंत्री के विरूद्ध उगले जा रहे हैं। मुझे आश्चर्य है कि सर्वोच्च न्यायालय उसका संज्ञान क्यों नहीं ले रहा। सर्वोच्च न्यायालय को स्वतः संज्ञान लेने का अधिकार है और संज्ञान लेना चाहिए। ऐसा व्यक्ति जिसको घोटाले में सजा हो चुकी है खुलेआम भड़काऊ भाषण दे रहा है, गालियाँ दे रहा है, गौमांस खाने की वकालत कर रहा है उसको जमानत दे दी गई और इस सबके बावजूद भी उसकी जमानत रद्द नहीं हो रही जबकि भड़काऊ भाषण देने पर वरूण गांधी को क्या-क्या नहीं भुगतना पड़ा था। लेकिन बिहार के इस पदावनत मुख्यमंत्री के बयानों का कोई संज्ञान नहीं लिया जा रहा। चुनाव आयोग भी चुप है। जबकि जरा-जरा सी बात पर चुनाव आयोग संज्ञान लेता है और कार्यवाही करता है। लेकिन इस मामले में खामोश है। क्या सर्वोच्च न्यायालय और चुनाव आयोग दोनों ही दबंगों से डरते हैं। अथवा संविधान में भारत के प्रधानमंत्री को गालियाँ देने से देश का कोई अपमान नहीं होता। विदेशों में छवि खराब नहीं होती। जिस तरह के व्यंग्य बाण और जिस तरह से गालियों की बौछार की जा रही है उससे शान्ति भंग हो सकती है। वह तो ईश्वर की बड़ी कृपा है कि हिन्दू अहिंसा परमो धर्मः के तालाब में डूबा हुआ है और उसे न तो हिंसा अच्छी लगती है, न हिंसा करता है और ना ही हिंसा का जवाब अच्छी तरह देना जानता है। इसीलिए इतिहास गवाह है कि प्रतिरोध किए बगैर हिन्दू मारे जाते हैं। कश्मीर में सिक्खों का कत्ल हो जाता है, कश्मीरी पंडितों को घर से बाहर निकाल दिया जाता है, संविधान में सम्भवतः इन सब बातों का संज्ञान लेने के लिए कोई प्राविधान नहीं है। होना यह चाहिए कि जो देश के प्रधानमंत्री को गाली देता है अथवा उस पर व्यंग्य करता है। उसका संज्ञान लिया जाए और ऐसे व्यक्ति के विरूद्ध देश का अपमान करने का वाद योजित किया जाए। यह एक प्रकार से देशद्रोह के समान है। इस पर कड़ी से कड़ी दण्ड की व्यवस्था होनी चाहिए। जो व्यक्तिगत, पारिवारिक आक्षेप करते हैं उन पर भी लगाम लगानी आवश्यक है। लोकतंत्र का मतलब यह नहीं है कि जिसके जो जी में आए वह कहता घूमे। और भाषण की स्वतन्त्रता, अभिव्यक्ति की स्वतन्त्रता का अर्थ यह भी नहीं है कि आप किसी को भी अपशब्द कहने के लिए स्वतन्त्र हैं, जिस प्रकार की भाषा का प्रयोग उत्तर प्रदेश के एक मंत्री महोदय करते हैं। उससे अशांति हो सकती है और जिस दिन हिन्दू अहिंसा परमो धर्मः को भूलकर ईट का जवाब पत्थर से देना सीख जाएगा। उस दिन यह भाषण अवश्य ही रूक जाएँगे लेकिन ऐसी नौबत नहीं आनी चाहिए। सरकार को संविधान में भारतीय दण्ड संहिता में तथा दण्ड प्रक्रिया संहिता में संशोधन करना चाहिए। तथा अपशब्दों के प्रयोग पर भी दण्ड का प्राविधान सुनिश्चित करना चाहिए। प्रधानमंत्री को अपशब्द कहने पर पूर्णतया प्रतिबन्ध होना चाहिए और यदि कोई व्यक्ति बार-बार कहने पर भी ना माने तो उसको अधिकतम दण्ड देने का प्राविधान होना चाहिए, जिससे उसकी जुबान सदैव के लिए बन्द हो सके अन्यथा स्थिति बिगड़ सकती है। क्योंकि सहनशीलता की भी एक सीमा होती है और जब उस सीमा को छेदकर गालियाँ अथवा अपशब्दों का प्रयोग किया जाता है तो एक गिरा-पड़ा व्यक्ति भी प्रतिरोध अवश्य करता है। अतः ऐसे वाक्यों का प्रयोग जो किसी व्यक्ति होने की स्थिति तक पहुंचा दे प्रतिबन्धित होने चाहिए। सम्भवतः सरकार के कानों तक यह आवाज पहुंचेगी और इस पर उचित निर्णय अवश्य ही लिया जाएगा।

आर्य समाज आर्य नगर बदायूँ का वार्षिकोत्सव

आर्य समाज आर्य नगर (इस्लाम नगर) बदायूँ का ११६वाँ वार्षिकोत्सव दिनांक ७ से ६ नवम्बर, २०१५ को आर्य कन्या इण्टर कालेज, इस्लाम नगर में होगा।

दिनांक ६ नवम्बर, १५ को आर्य समाज के नवनिर्मित हाल का उद्घाटन प्रातः ११ बजे आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश के प्रधान श्री देवेन्द्रपाल वर्मा के कर कमलों से सम्पन्न होगा।

उत्सव में वैदिक विद्वान् स्वामी ब्रह्मानन्द सरस्वती वेद भिक्षु श्री उदयराज भजनोपदेश, श्री संजीव रूप श्री धूम सिंह शास्त्री, सुश्री क्षमा कुरवार, पं. भूदेव शास्त्री, श्री लोकेन्द्र शास्त्री के उपदेश व भजन होंगे।

-शिवओ३म्, मंत्री

!! ओ३म् !!

''कृण्वन्तो' विश्वमार्यम''

आर्य प्रतिनिधि सभा, उ.प्र. लखनऊ एवं जिला सभा हापुड़

के तत्वावधान में

गुरूकुल महाविद्यालय पूठ, गढ़मुक्तेश्वर, हापुड़ की

रजत जयंती समारोह के उपलक्ष्य में

उ.प्र. प्रान्तीय आर्य महासम्मेलन-(गुरूकुल पूठ) हापुड़

६, ७ व ८ नवम्बर २०१५ दिन शुक्रवार, शनिवार व रविवार

महोदय,

आपको जानकर हर्ष होगा कि आपके प्रिय गुरूकुल महाविद्यालय पूठ निकट गढ़ मुक्तेश्वर जिला हापुड़ (उ.प्र.) के रजत जयंती के पावन अवसर पर आर्य प्रतिनिधि सभा, उ.प्र. द्वारा प्रान्तीय आर्य महासम्मेलन आयोजित करने का निर्णय लिया है। इस अवसर पर युवा चरित्र निर्माण सम्मेलन, यज्ञ योग सम्मेलन, राष्ट्र रक्षा सम्मेलन, शिक्षा सम्मेलन, गुरूकुल सम्मेलन आर्य महासम्मेलन के माध्यम से भावी पीढ़ी के चरित्र निर्माण द्वारा सामाजिक कुरीतियों का उन्मूलन कर समाज एवं परिवार में मधुरता लाने के लिए तथा आपके परिवार में सुख शांति एवं स्वास्थ्य का वातावरण पैदा किया जायेगा। आत्मीयता से वैदिक संस्कृति एवं सभ्यता की रक्षा होगी। सम्मेलन के विचारों से माता पिता को सम्मान एवं वृद्धों का आशीर्वाद लेकर आप अपने जीवन को जीने की कला सीख सकेंगे। अतः आप अभी से गुरूकुल पूठ आने का निश्चित संकल्प कर लेवें। सम्मेलन की सफलता के लिए आर्यजगत् के मूर्धन्य उच्च कोटि के सन्यासी, विद्वान, उपदेशक, आर्य भजनोपदेशक पधार रहे हैं। आप अपने अपने क्षेत्र एवं जिलों से अधिक से अधिक संख्या में पधार कर कार्यक्रम की शोभा बढायेंगे। यह हमारा सौभाग्य होगा।

-: कार्यक्रम प्रतिदिन :-

प्रातः ५:३० बजे से ७:०० बजे तक	योग साधना, आसन प्राणायाम द्वारा रोगनिवृत्ति
प्रातः ७:०० बजे से ६:३० बजे तक	यज्ञ, भजन, आध्यात्मिक उपदेश
प्रातः १० बजे से १:०० बजे तक	सम्मेलन एवं सम्मान समारोह
मध्यान्ह १ बजे से ५:३० बजे तक	भजन, सम्मेलन, व्यायाम प्रदर्शन
रात्रि ७:०० बजे से १०:०० बजे तक	भजन, उपदेश, सम्मेलन

नोटः- यह गुरूकुल गढ़ मुक्तेश्वर गंगा किनारे ग्राम पूठ में स्थित है। गढ़मुक्तेश्वर से डहराकुटी होते हुए बहादुरगढ़ थाना से भी बस सवारी मिलेगी।

देवेन्द्र पाल वर्मा प्रधान — **धर्मेश्वरानन्द सरस्वती** सभामंत्री — **डा. धीरज सिंह** कोषाध्यक्ष

ज्ञानेन्द्र गांधी मुख्य संयोजक — **विकास आर्य** संयोजक

गुरुकुल के अधिकारीगण- **सत्यानन्द आर्य** अध्यक्ष, **सुशील अग्रवाल** अध्यक्ष ट्रस्ट, **प्रणवानन्द सरस्वती** प्रबन्धक, **रमेश चन्द्र शास्त्री** मन्त्री

सत्येन्द्र सिंह पंवार अधिष्ठाता, **सत्यवीर चौधरी** अध्यक्ष-गौशाला, **संजीव रामा शौदान आर्य** प्रबन्धक-गौशाला, **महेश आर्य** उपाध्यक्ष, **चन्द्रपाल आर्य** कोषाध्यक्ष, **राजीव आचार्य** उपमंत्री, प्राचार्य

सह-संयोजक-धनन्जय भाटी, अजय दादू, अनिल आर्य, अशोक आर्य जिला मंत्री, ज्ञानेन्द्र चौधरी-जिला कोषाध्यक्ष आनन्द आर्य, नरेन्द्र आर्य, राजेन्द्र सिंह-प्रबन्धक, दिनेश खेड़ा, प्रमोद आचार्य, बाबू सुरेन्द्र सिंह, जितेन्द्र सिंह, जगवीर सिंह, सुन्दरलाल आर्य, ओ.पी. गौतम, प्रियपाल चौ., मा. ज्ञानेन्द्र सिंह, जनमेजय शास्त्री

प्रदेश-उपाध्यक्ष-गायत्री दीक्षित, मनमोहन तिवारी, अरविन्द आर्य, बेचन सिंह आर्य, पूरण सिंह ब्रह्मचारी

प्रदेश-उपमंत्री-हरपाल सिंह आर्य, गिरिजा त्रिपाठी, शिव कुमार आर्य, राम कुमार सिंह, रामचन्द्र सिंह आर्य

पृष्ठ.१ का शेष भाग...

गया। भारत के संविधान में ऋषि दयानन्द के सारे मन्तव्य जोड़े गये हैं। जिनके आधार पर देश में प्रगति होने लगी। धीरे धीरे राजनेताओं में सत्ता की हवश बढ़ने लगी राष्ट्रोत्थान का कार्य शिथिल होने लगा। सभी बुराइयां नये नये रूप में फैलने लगी हैं। ढोंग पाखण्ड नारी शोषण जातिवाद बढ़ने लगा है ऐसे में हम सभी आर्यो का दायित्व है कि हम सभी प्रकार की बुराइयों को जड़मूल से मिटाने केलिए संकल्प बद्ध हों और आर्य समाज के आन्दोलन को सक्रियता से चलाने में एक जुट हों निश्चय ही ऐसा करने पर हम महर्षि दयानन्द के सपनों का भारत बनाने में सफल होंगे।

अन्त में प्रधान जी ने सभी आयोजकों को उत्तम आयोजन के लिए धन्यवाद प्रदान करके अपने भाषण को विराम दिया। सभा में केन्द्रीस सभा के महामंत्री श्री वीर सिंह, आ.स. राजनगर के मंत्री सत्यवीर चोधरी व प्रधान श्री श्रृद्धानन्द शर्मा प्रतिष्ठित सदस्य आ.प्र.सभा उ.प्र.व आ.स. नन्दग्राम के प्रधान श्री प्रवीन आर्य, जिला सभा के प्रधान श्री सुभाष सिंघल, कोषाध्यक्ष जिला सभा, सरेन्द्रपाल सिंह आर्य समाज मूड भारत नगर व जनपद की बहुसंख्यक समाजें एवं आर्यजन उपस्थित थे।

सभा मंत्री स्वामी धर्मेश्वरानन्द ने अपने प्रवचनों के द्वारा सभी को वेदपथ पर चल कर देश को समुन्नत बनाने का सन्देश दिया। उन्होंने यह भी कहा कि हमें अपने बच्चों को साथ में आर्य समाज के कार्यक्रमों में लाना चाहिए ताकि वे वैदिक संस्कार पा सकें क्योंकि वे ही तो देश के भावी भाग्य विधाता बनेंगे। युवा वर्ग में अनुशासन देश प्रेम भरने के लिए हर आर्य समाज में आर्यवीर दल की स्थापना करने को कहा।

वर्तमान और बेटी

बेटा न बेचो, बेटियों को बचाओं,
जिगर के टुकड़े, इन्हें मत सताओं।
फर्क इनमें करो न, है दोनों तुम्हारें,
दो बराबर मुहब्बत, आदर्श भारतीय बनाओं।।

करते हो पूजा, हो दरगाह जाते,
हो औलाद पैदा, हो बहुत गिड़गिड़ाते।
अपने बीते दिनों को, जरा याद कर लो,
घर बाहर पूजाऐं, थे कितनी कराते।।

आज क्यों भूल बैठे, ऐ बापो बताओ,
हृदय तंत्री अपनी खुद ही जगाओ।
फर्क इनमें करो न, है दोनों तुम्हारें,
दो बराबर मुहब्बत, आदर्श भारतीय बनाओं।।

भाई बहन त्योहार, जब भी है आये,
जज्बे से कितना, हैं रिश्ते निभाते।
त्योहार राखी हो, या हो दूज टीका,
बहन बांधे राखी, है टीका लगाते।।

चरण छू लो बहना, बहन आशीष पाओ,
पवित्र है यह रिश्ता, इसको निभाओं।
फर्क इनमें करो न, है दोनों तुम्हारें,
दो बराबर मुहब्बत, आदर्श भारतीय बनाओं।।

लफ्ज़ बेटी बहू को मिला करके देखों,
बहू बेटिया ही है बनती, इतना तो सोचो।
सम्बोधन में थोड़ी खूबसूरती है लानी,
ससुर-बाप कहने के, अन्तर को सोचो।

बस बहू को 'बेटी बहू' कहकर बुलाओ,
हो आप आदर्श, करके दिखाओ।
फर्क इनमें करो न, है दोनों तुम्हारें,
दो बराबर मुहब्बत, आदर्श भारतीय बनाओ।।

देखों मौका मिला, आज बेटिया है छाई,
हर जगह है ये आगे, घर या मैंदा लड़ाई।
राष्ट्र ही नही अन्तर्राष्ट्रीय महिला बनी हैं,
अरे फर्ज है तुम्हारा इन्हें दुआ दे, बधाई।।

दे आवाज सागर अरे इंसानों जाग जाओं,
हो दया नन्दी वाहक जग को बताओ।
फर्क इनमें करो न है दोनों तुम्हारें,
दो बराबर मुहब्बत, आदर्श भारतीय बनाओं।।

रचईता - डा० बी०पी० सागर

आर्य समाज सिरसा इलाहाबाद का वार्षिकोत्सव

आर्य समाज सिरसा इलाहाबाद का वार्षिकोत्सव दिनांक १३, १४ एवं १५ नवम्बर, २०१५ को आर्य समाज सिरसा इलाहाबाद में धूमधाम से मनाया जायेगा। जिसमें यज्ञ, हवन, प्रवचन एवं भजन आदि के कार्यक्रम आयोजित किये जायेंगे। अधिक से अधिक संख्या में आर्य नर-नारी पधारकर ज्ञानार्जन करने का लाभ उठायें और आयोजकों को उत्साहवर्धन करें।

आर्य समाज पूरे धनेऊ (कुण्डा) का वार्षिकोत्सव 12 नवम्बर, 2015

आर्य समाज पूरे धनेऊ (कुण्डा) प्रतापगढ़ का वार्षिकोत्सव बड़े धूमधाम के साथ १२ से १४ नवम्बर, २०१५ को स्थानीय आर्य समाज के प्रांगण में मनाया जायेगा जिसमें इलाहाबाद से अशर्फी लाल शास्त्री एवं लखनऊ से विमल किशोर आर्य वैदिक प्रवक्ता देवव्रत आर्य तथा बिजनौर से श्री टीकम सिंह भजनोपदेशक पधार रहे हैं। कार्यक्रम की जानकारी देते हुये श्री महेन्द्र सिंह आर्य ने बताया कि उपरोक्त अवसर पर प्रातः ८ बजे से यज्ञ एवं विद्वानों के वेद प्रवचन तथा सायंकाल ८ से ११ बजे तक विभिन्न विषयों पर और विद्वानों के व्याख्यान होंगे।

निर्वाचन

आर्य समाज नगरिया परीक्षित, बरेली

प्रधान	::	श्री बलवार सिंह
मंत्री	::	श्री धर्मवीर सिंह आर्य
कोषाध्यक्ष	::	श्री सत्येन्द्र कुमार शर्मा

पंजी०सं० आर.एन.आई.-२४४१/५७ - आर्यमित्र ०३ नवम्बर, २०१५ पोस्टल रजि.जी.पी.ओ. लखनऊ/एन.पी.-१४-२०१६-१८ एक प्रति ₹ २.००

आर्य मित्र
नारायण स्वामी भवन, ५-मीराबाई मार्ग, लखनऊ दूर./फैक्सः०५२२-२२८६३२८
प्रधान-०६४१२६७८५७१, मंत्री-०६८३७४०२१६२, सम्पादक-६५३२७४६६००
ई.मेल-apsabhaup86@gmail.com

सेवा में,

.....

.....

.....

आर्य समाज चैड़ौली बुजुर्ग के उत्सव के कतिपय चि.

आर्य समाज गोविन्दपुरम् के कतिपय चित्र

सभा प्रधान जी के आगामी कार्यक्रम

दिनांक	६, ७, ८.११.२०१५	गुरुकुल पूठ, हापुड़
दिनांक	६.११.२०१५	आर्य समाज इस्लामनगर, बदायूँ
दिनांक	२२.११.२०१५	रानीमण्डी, इलाहाबाद
दिनांक	१३.१२.२०१५	जिला आर्य प्रतिनिधि सभा सुल्तानपुर

स्वामी–आर्य प्रतिनिधि सभा, उत्तर प्रदेश सम्पादक–आचार्य वेदव्रत अवस्थी, मुद्रक प्रकाशक–श्री सियाराम वर्मा, भगवानदीन आर्य भाष्कर प्रेस, ५–मीराबाई मार्ग, लखनऊ के लिए अस्थायी रूप में शुभम् आफ्सेट प्रिंटर्स, कैसरबाग, लखनऊ से मुद्रित एवं प्रकाशित
लेखों में वर्णित भाषा या भाव से सम्पादक का सहमत होना आवश्यक नहीं है–सम्पूर्ण विवादों का न्याय क्षेत्र लखनऊ न्यायालय होगा।